दिनांक :- 02-07-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- एक

पत्र :- एक

अध्याय :- मौर्योत्तर काल स्त्रोत

सिक्के : इण्डोग्रीक, कुषाण, सातावाहन

इण्डोग्रीक शासक प्रथम भारतीय शासक थे जिन्होंने (उत्तर पश्चिम भारत में) सोने के सिक्के जारी किए। पहली बार इण्डोग्रीक शासकों के समय से ही सिक्के से ही सिक्के राजाओं के साथ जुड़ गये क्योंकि इससे पहले ये व्यापारिक श्रेणियों द्वारा जारी किये जाते थे। इण्डोग्रीक शासकों

Scanned with CamScanner

ने ही सर्वप्रथम आकृति तथा लेखयुक्त सिक्के चलाये।

अभिलेख : रुद्रदमन का जूनागढ़ शासकोने ही सर्वप्रथम (यह संस्कृति का प्रथम बड़ा अभिलेख है)

खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख (यह पहला प्रशस्ति अभिलेख

गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख (सातावाहन)

धनदेव का अयोध्या अभिलेख (शुंगकाल)

वाशिष्ठीपुत्र पुलुमयी का कन्हेरी अभिलेख (सातावाहन)

नागनिका का नाना घाट अभिलेख

हेलियोडोरस का वेसनगर स्तंभ अभिलेख (हिन्द-यूनानी

थीयोडोफनेज, कौशाम्बी, सारनाथ, मथुरा, सुई बिहार

जेदा मनिक्याल अभिलेख।

सातवाहन शासको द्वारा जारी ताम्रपात्र।

साहित्यिक साक्ष्य :- पुराण (मत्स्य, वायु, ब्रह्मांड) हर्षचरित

दिव्यावदान ललितविस्तर, आर्यमंजुश्रीमूलकल्प मिलिन्दपन्ह

गार्गी संहिता, मालविकाग्निमित्रम, पातंजलि का महा भाष्य, थेरावली पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रीयन सी हरिवंश, टॉलेमी के विवरण स्ट्रैबो का ज्योग्राफी पिलनी की नेचुरल हिस्टोरिकल, लामा तारानाथ का तिब्बत का इतिहास पोलिबियस का विवरण, विशाखदत्त रचित देवीचन्द्रगुप्तम, कालकाचार्य कथानक (जैन ग्रंथ) फाहियान तथा ह्वेनसांग का विवरण।

भट्ट स्वामी द्वारा लिखित प्रतिपदा पंचिका (यह अर्थ शास्त्र पर टीका है) वायु पुराण मे इतिहास की परिभाषा तथा स्रोत का वर्णन है।

शुंग वंश :- बाण भट्ट के हर्षचरित्र से सूचना प्राप्त होती है कि 185 ईसा पूर्व मे अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या उसी के सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी दिव्यावदान ने पुष्यमित्र को मौर्य वंश से संबद्ध

Scanned with CamScanner

माना है किंतु यह बात सही नहीं है। कालीदास के मालविकाग्निमित्र के अनुसार शुंग वंशी शासक वैम्बिक कुलीन ब्राह्मण थे। बौद्धायन भी इसे वैम्बिक कुल से ही संबद्ध मानता है। तारानाथ ने भी उसे ब्राह्मण ही बताया है। पुष्यमित्र शुंग उज्जैन का ब्राह्मण था। हर्षचरित्र में पुष्यमित्र को अनार्य कहा गया है तथा आश्वालायन श्रौतसूत्र में शुंगों का उल्लेख आचार्यों के रूप में मिलता है।

धनदेव के अयोध्या अभिलेख से ज्ञात होता है कि पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किये।

उसी काल में भारत पर पुनः यवन आक्रमण को विफल कर दिया। पुष्यमित्र शुंग ने इसके पश्चात एक अश्वमेध यज्ञ किया। माना जाता है कि इस यज्ञ में स्वयं पतंजलि मुख्य पुरोहित थे।

Scanned with CamScanner

यवन आक्रमण की सूचना मालविकाग्निमित्रम, गार्गी संहिता, तथा महाभाष्य से मिलती है। स्मिथ महोदय का मानना है कि कलिंग के शासक के 12वें वर्ष में पाटलिपुत्र के बृहस्पतिमित्र नामक जिस शासक को फहराने का दावा किया वह स्वंय पुष्यमित्र शुंग ही था। मालविकाग्निमित्रम से ज्ञात होता है कि पुष्यमित्र शुंग ने मात्र सेनानी की उपाधि ली, राजा की नही, जबकि अग्निमित्र ने राजा की उपाधि ली।

दिव्यावदान तथा आर्यमंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने बौद्धो का धार्मिक उत्पीड़न किया तथा स्तूपो का विनाश किया। किंतु भरहुत स्तूप बनाने का श्रेय पुष्यमित्र को ही दिया जाता है। उसने सांची स्तूप मे भी एक रेलिंग/वेदिका लगवाया था।

पुष्यमित्र शुंग ने 36 वर्षों तक राज्य किया तथा लगभग 148 ई.सा पूर्व में उसकी मृत्यु हुई।

पुष्यमित्र ने निम्नलिखित उत्तराधिकारियों की चर्चा मिलती है।

अग्निमित्र, सुज्येष्ठ, सुमित्र - वसुमित्र - भागवत् - देवभूमि।

पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र की हत्या आमात्य परिषद की चर्चा मालविकाग्निमित्रम में की गई है।

अग्निमित्र ही कालिदास के द्वारा लिखित मालविकाग्निमित्र का नायक है।

शुंग शासक भागभद्र (भागवत) भी महत्वपूर्ण शासक था। उसी के दरबार में यवन शासक एण्टियालकिडास का राजदूत हेलियोडोरस आया था। हेलियोडोरस ने भागवत सम्मान में एक गरुड़ ध्वज की स्थापना की जिसपर दम (आत्मनिग्रह)

Scanned with CamScanner

त्याग तथा अप्रमाद तीन शब्द अंकित किये गए है।
शुंग काल मे ही मनुस्मृति तथा पातंजलि के महाभाष्य की रचना हुई। महाभाष्य पाणिनी के अष्टाध्यायी पर टीका है। इसकी रचना दूसरी सदी ईसा पूर्व मे ही की गई थी। पातंजलि ने ऐसे लोगो को शिष्ट नाम दिया है जो बिना प्रयास के ही संस्कृत बोल देते थे।

कण्व वंश :- ७५ ईसा पूर्व - ३० ईसा पूर्व —
माना जाता है कि अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या उसके अधिकारी वासुदेव ने कर दी और फिर उसने कण्व वंश की स्थापना की।
पुराणो मे इस वंश के चार शासको के नाम मिलते है वसुदेव, भूमिमित्र (भूमित्र), नारायण तथा सुशर्मन माना जाता है कि ३० ईसा पूर्व मे आंध्र भृत्यो है।